॥ श्री ॥

भगवती आराधना

BHAGAVATI AARAADHANAA

आ. शिवार्य · ३वीं शती · अभिलेख ११/९०

श्री मित्रनन्दि → आ. शिवार्य

संक्षिप्त परिचय

आचार्य शिवार्य (शिवकोटि) कृत विशाल प्राकृत ग्रन्थ — दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप इन चार आराधनाओं का, विशेषतः समाधिमरण की विधि और भावना का विस्तृत निरूपण।

मूलाराधना नाम से भी प्रसिद्ध; साधक के अन्तिम मंगल की अनुपम मार्गदर्शिका।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

भगवती आराधना — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ११ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. शिवार्य; रचना-काल ३वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ३५) के अनुसार इनका समय पूर्वपाद है तथा गुरु श्री मित्रनन्दि। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "मूलाराधना" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में तिलोयपण्णत्ति, रत्नकरण्ड श्रावकाचार परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

तिलोयपण्णत्ति · रत्नकरण्ड श्रावकाचार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ११ — मूल छायाचित्र

← तिलोयपण्णत्ति

तत्त्वार्थसूत्र →